Title: Need to provide more facilities to the farming sector with a view to make it remunerative.

श्री रामजी लाल सुमन (फिरोजाबाद) ; उपाध्यक्ष महोदय, देश में किसानों द्वारा आत्म-हत्यायें किए जाने के निरन्तर समाचार आ रहे हैं। समाचारों की गम्भीरता को देखकर सरकार ने किसानों को सुलभ कर्ज वित्तीय संस्थाओं से उपलब्ध कराने का प्रबन्ध किया है। आज किसान कर्ज का भुगतान नहीं कर पा रहा है, क्योंकि खेती अलाभकारी बन चुकी है। जरूरत है, खेती को लाभकारी बनाने की। देश के किसान का मुकाबला आज अन्तर्राट्रीय बाजार से है। एफएओ प्रोडक्शन इयर बुक, 1998 में स्पट उल्लेख है कि भारत की कृाि उपज दर अन्तर्राट्रीय स्तर पर उपज दर से कम है। दूसरी ओर देश में खेती की उत्पाद लागत लगातार बढ़ती जा रही है। उदाहरण के लिए यूरिया की उत्पादन लागत 1998 में 6823 रुपये प्रति मिट्रिक टन थी, जो बढ़कर 2001 में 8196 रुपये हो गई। उत्पादन लागत में बढ़ोतरी और उपज दर में कमी ने खेती को अलाभकारी कर दिया है। इसी कारण किसान कर्ज का भुगतान नहीं कर पा रहा है।

अतः मेरा आग्रह है कि सरकार देश में, उपज दर बढ़ाने उत्पादन लागत कम करने और उत्पादक व उपभोक्ता के मूल्यों के बीच के अन्तर को न्यायोचित बनाने के लिए प्रभावी कार्रवाई करे और देश में खेती को लाभकारी बनाए।